ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department OF - History - subsidiary
19-05-2020 B.A.I - [2019 - 20]
Dr. Satyajeet Sarang [Notes]

[5.] चन्द्रगुप्त - II [380-412ई०]

★ उपाधियां:- विक्रमांक, विक्रमादित्य, परमभागवत ।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त हो गया था ।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के अन्य नाम :- देवगुप्त, देवराज, देवश्री, ।

⇒ चन्द्रगुप्त द्वितीय का साम्राज्य पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में बंगाल तक तथा उत्तर में हिमालय की तलहटी से दक्षिण में नर्मदा नदी तक विस्तृत था ।

चन्द्रगुप्त द्वितीय का काल साहित्य और कला का स्वर्ण युग कहा जाता है ।

इसने रजत मुद्राओं [Silver coins] का सर्वप्रथम प्रचलन करवाया था ।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में 9 रत्न थे ।

चन्द्रगुप्त-II के शासनकाल में चीनी यात्री फाह्यान [399ई०-412ई०] भारत यात्रा पर आया था ।

चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के पश्चात उसका पुत्र कुमारगुप्त प्रथम गुप्त साम्राज्य का शासक बना ।

वैवाहिक संबंध

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने वैवाहिक संबंधों और विजयों के द्वारा अपने साम्राज्य की सीमा बढ़ायी थी ।

1. नागवंश :-
यह राजवंश मथुरा, अहिच्छत्र, पद्मावती क्षेत्रों में स्थित था। विक्रमादित्य ने नाग राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया। उससे एक कन्या प्रभावती गुप्त उत्पन्न हुई।

2. वाकाटक वंश :-
वाकाटक लोग आधुनिक महाराष्ट्र प्रांत में शासन करते थे। वाकाटकों का सहयोग प्राप्त करने के लिए चन्द्रगुप्त ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन - II द्वितीय के साथ कर दिया। वाकाटकों तथा गुप्तों की सम्मिलित शक्ति ने शकों का उन्मूलन कर डाला।

3. कदम्ब राजवंश :-
कदम्ब राजवंश के लोग कुंतल [कर्नाटक] में शासन करते थे। तालगुंड अभिलेख से पता चलता है कि इस वंश के एक शासक काकुत्सवर्मन ने अपनी एक पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त द्वितीय के पुत्र कुमारगुप्त प्रथम से कर दिया।

[6.] कुमारगुप्त - I [415 - ~~455~~ 450]
चन्द्रगुप्त द्वितीय के उपरान्त कुमारगुप्त प्रथम शासक बना। परन्तु कुमारगुप्त के पूर्व एक और शासक का नाम आता है वह शासक ध्रुवदेवी [रामगुप्त की पत्नी] का पुत्र गोविन्द गुप्त था। यह एक विवादास्पद विषय है।

⇒ कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल में नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी। कुमारगुप्त की मुद्राओं में गरुड़ के स्थान पर मयूर की आकृति अंकित की गयी। कुमारगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया तथा अश्वमेध प्रकार की मुद्रा चलाई। बिलसड़ अभिलेख से ही कुमारगुप्त तक गुप्तों की वंशावली प्राप्त होती है। कुमार गुप्त के सुव्यवस्थित शासन वर्णन उसके मंदसौर अभिलेख से मिलता है। यह अभिलेख एक प्रशस्ति के रूप में है जिसकी रचना वत्सभट्टि ने की थी।

★ गुप्त शासकों में सर्वाधिक अभिलेख कुमार गुप्त के मिलते है।

मध्यभारत में रजत सिक्कों का प्रचलन उसी के काल में हुआ। इन मुद्राओं पर गरुण के स्थान पर मयूर की आकृति उत्कीर्ण की गई है। चाँदी के सिक्के पर मयूर की आकृति। कुमार गुप्त के सिक्कों से पता चलता है कि उसने अश्वमेध यज्ञ किया था।

[7] स्कन्दगुप्त [455-467 ई०]

★ कुमारगुप्त प्रथम की मृत्यु के बाद स्कन्दगुप्त शासक बना। उसके शासन की बागडोर संभालते ही हूणों का आक्रमण हुआ। म्लेच्छों [हूणों] पर स्कन्द गुप्त की सफलता का गुणगान जूनागढ़ अभिलेख में मिलता है। चन्द्रगर्भ परिपृच्छ नामक ग्रन्थ में भी महेन्द्रसेन [कुमारगुप्त प्रथम] के पुत्र द्वारा विदेशियों पर विजय प्राप्त करने का साहित्यिक प्रमाण उपलब्ध है।

स्कन्दगुप्त एक योग्य सैन्य संचालक के साथ ही एक कुशल प्रशासक भी था। उसने गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का पुनरूद्धार कराया, जिसका निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य ने किया था और अशोक तथा रूद्रदामन ने मरम्मत करायी थी। स्कन्दगुप्त ने सुदर्शन झील के पुनरूद्धार का कार्य सौराष्ट्र के गवर्नर पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित को सौंपा था। उसने झील के किनारे एक विष्णु मंदिर का निर्माण भी करवाया था।

स्कन्दगुप्त की कहौम स्तम्भ लेख एवं आर्यमंजुश्री मूलकल्प में देवराज तथा जूनागढ़ अभिलेख में 'परिक्षिप्तवक्ष' कहा गया है। स्कन्दगुप्त ने 466 ई० में चीनी सांग सम्राट के दरबार में राजदूत भेजे इससे उसके सुदूर चीन के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का पता चलता है। स्कन्दगुप्त के उत्तराधिकारियों में बुद्धगुप्त सबसे अधिक शक्तिशाली राजा प्रशासनिक सुविधा के लिए स्कंद गुप्त ने अपनी राजधानी को अयोध्या स्थानांतरित किया।

हूणों का आक्रमण

* गुप्तों के पतन के कारणों में हूणों का आक्रमण एक विशिष्ट कारण रहा है। तोरमाण हूणों का प्रथम शासक था। धन्यविष्णु के एरण (मालवा) अभिलेख में भी तोरमाण का जिक्र आता है।